
बड़े व्रत



मनुष्य को पुण्य के आचरण से सुख और पाप के आचरण से दुःख होता है। संसार का प्रत्येक प्राणी अपने अनुकूल सुख की प्राप्ति और अपने प्रतिकूल दुःख की निवृत्ति चाहता है। मानव की इस परिस्थिति को अवगत कर त्रिकालज्ञ और परहित में रत ऋषिमुनियों ने वेद, पुराण, स्मृति और समस्त निबंधग्रंथों को आत्मसात् कर मानव के कल्याण के हेतु सुख की प्राप्ति तथा दुःख की निवृत्ति के लिए अनेक उपाय कहे हैं। उन्हीं उपायों में से व्रत और उपवास श्रेष्ठ तथा सुगम उपाय हैं। व्रतों के विधान करनेवाले ग्रंथों में व्रत के अनेक अंगों का वर्णन देखने में आता है। उन अंगों का विवेचन करने पर दिखाई पड़ता है कि उपवास भी व्रत का एक प्रमुख अंग है। इसीलिए अनेक स्थलों पर यह कहा गया है कि व्रत और उपवास में परस्पर अंगागि भाव संबंध है। अनेक व्रतों के आचरणकाल में उपवास करने का विधान देखा जाता है।

व्रत, धर्म का साधन माना गया है। संसार के समस्त धर्मों ने किसी न किसी रूप में व्रत और उपवास को अपनाया है। व्रत के आचरण से पापों का नाश, पुण्य का उदय, शरीर और मन की शुद्धि, अभिलषित मनोरथ की प्राप्ति और शांति तथा परम पुरुषार्थ की सिद्धि होती है।

वैदिक काल की अपेक्षा पौराणिक युग में अधिक व्रत देखने में आते हैं। उस काल में व्रत के प्रकार अनेक हो जाते हैं। व्रत के समय व्यवहार में लाए जानेवाले नियमों की कठोरता भी कम हो जाती है तथा नियमों में अनेक प्रकार के विकल्प भी देखने में आते हैं। उदाहरण रूप में जहाँ एकादशी के दिन उपवास करने का विधान है, वहाँ विकल्प में लघु फलाहार और वह भी संभव न हो तो फिर एक बार ओदनरहित अन्नाहार करने तक का विधान शास्त्रसम्मत देखा जाता है। इसी प्रकार किसी भी व्रत के आचरण के लिए तदर्थ विहित समय अपेक्षित है। “वसंते ब्राह्मणोऽग्नी नादधीत” अर्थात् वसंत ऋतु में ब्राह्मण अग्निपरिग्रह व्रत का प्रारंभ करे, इस श्रुति के अनुसार जिस प्रकार वसंत ऋतु में अग्निपरिग्रह व्रत के प्रारंभ करने का विधान है वैसे ही चांद्रायण आदि व्रतों के आचरण के निमित्त वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण तक का विधान है। इस पौराणिक युग में तिथि पर आश्रित रहनेवाले व्रतों की बहुलता है। कुछ व्रत अधिक समय में, कुछ अल्प समय में पूर्ण होते हैं।

नित्य, नैमित्तिक और काम्य, इन भेदों से व्रत तीन प्रकार के होते हैं। जिस व्रत का आचरण सर्वदा के लिए आवश्यक है और जिसके न करने से मानव दोषी होता है वह नित्यव्रत है। सत्य बोलना, पवित्र रहना, इंद्रियों का निग्रह करना, कोध न करना, अश्लील भाषण न करना और परनिंदा न करना आदि नित्यव्रत हैं। किसी प्रकार के पातक के हो जाने पर या अन्य किसी प्रकार के निमित्त के उपस्थित होने पर चांद्रायण प्रभृति जो व्रत किए जाते हैं वे नैमित्तिक व्रत हैं। जो व्रत किसी प्रकार की कामना विशेष से प्रोत्साहित होकर मानव के द्वारा संपन्न किए जाते हैं वे काम्य व्रत हैं स यथा पुत्रप्राप्ति के लिए राजा दिलीप ने जो गोव्रत किया था वह काम्य व्रत है।

पुरुषों एवं स्त्रियों के लिए पृथक् व्रतों का अनुष्ठान कहा है। कतिपय व्रत उभय के लिए सामान्य है तथा कतिपय व्रतों को दोनों मिलकर ही कर सकते हैं। श्रवण शुक्ल पूर्णिमा, हस्त या श्रवण नक्षत्र में किया जानेवाला उपाकर्म व्रत केवल पुरुषों के लिए विहित है। भाद्रपद शुक्ल तृतीया को आचारणीय हरितालिक व्रत केवल स्त्रियों के लिए कहा है। एकादशी जैसा व्रत दोनों ही के लिए सामान्य रूप से विहित है। शुभ मुहूर्त में किए जानेवाले कन्यादान जैसे व्रत दंपति के द्वारा ही किए जा सकते हैं।

प्रत्येक व्रत के आचरण के लिए थोड़ा या बहुत समय निश्चित है। जैसे सत्य और अहिंसा व्रत का पालन करने का समय यावज्जीवन कहा गया है वैसे ही अन्य व्रतों के लिए भी समय निर्धारित है। महाव्रत जैसे व्रत सोलह वर्षों में पर्ण होते हैं। वेदव्रत और ध्वजव्रत की समाप्ति बारह वर्षों में होती है। पंचमहाभूतव्रत, संतानाष्टमीव्रत, शकव्रत और शीलावाप्तिव्रत एक वर्ष तक किया जाता है। अरुंधती व्रत वसंतऋतु में होता है। चैत्रमास में वत्सराधिव्रत, वैशाख मास में स्कंदपष्ठीव्रत, ज्येठ मास में निर्जला एकादशी व्रत, आषाढ़ मास में हरिश्यनव्रत, श्रावण मास में उपाकर्मव्रत, भाद्रपद मास में स्त्रियों के लिए हरितालिकव्रत, आश्विन मास में नवरात्रव्रत, कार्तिक मास में गोपाष्टमीव्रत, मार्गशीर्ष मास में भैरवाष्टमीव्रत, पौष मास में मार्त्तंडव्रत, माघ मास में षट्टितलाव्रत और फाल्गुन मास में महाशिवरात्रिव्रत प्रमुख हैं। महालक्ष्मीव्रत भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को प्रारंभ होकर सोलह दिनों में पूर्ण होता है। प्रत्येक संक्रांति को आचरणीय व्रतों में मेष संक्रांति को सुजन्मावाप्ति व्रत,

किया जाता है। तिथि पर आश्रित रहनेवाले व्रतों में एकादशी व्रत, किया जाता है। तिथि पर आश्रित रहनेवाले व्रतों में एकादशी व्रत, वार पर आश्रित व्रतों में रविवार को सूर्यव्रत, नक्षत्रों में अश्वनी नक्षत्र में शिवव्रत, योगों में विष्णुभयोग में धृतदानव्रत और करणों में नवकरण में विष्णुव्रत का अनुष्ठान विहित है। भक्ति और श्रद्धानुकूल चाहे जब किए जानेवाले व्रतों में सत्यनारायण व्रत प्रमुख है।

किसी भी व्रत के अनुष्ठान के लिए देश और स्थान की शुद्धि अपेक्षित है। उत्तम स्थान में किया हुआ अनुष्ठान शीघ्र तथा अच्छे फल को देनेवाला होता है। इसलिए किसी भी अनुष्ठान के प्रारंभ में संकल्प करते हुए सर्वप्रथम काल तथा देश का उच्चारण करना आवश्यक होता है। व्रतों के आचरण से देवता, ऋषि, पितृ और मानव प्रसन्न होते हैं। ये लोग प्रसन्न होकर मानव को आशीर्वाद देते हैं जिससे उसके अभिलिखित मनोरथ पूर्ण होते हैं। इस प्रकार श्रद्धापूर्वक किए गए व्रत और उपवास के अनुष्ठान से मानव को ऐहिक तथा आमुष्मिक सुखों की प्राप्ति होती है।

संक्रान्ति

महिने की महिने संक्रान्ति व्रत करते हैं और तेरह-तेरह चीजों दान भी करते हैं।

महीने की संक्रान्ति दान

हर महिने की संक्रान्ति का व्रत करते हैं और १३ चीजों का दान करते हैं। कौन से महिने में, क्या दान करना है एवं कौन सी संक्रान्ति है। यह ध्यान करने योग्य है।

१. चैत्र मास - मीन संक्रान्ति - सौभाग्य की वस्तु अन्न-जल दान।
२. बैशाख मास - मेष संक्रान्ति - सत्तु दान एवं अन्न दान।
३. ज्येष्ठ मास - वृष संक्रान्ति - जल दान, शीतल पेय दान।
४. आषाढ़ मास - मिथुन संक्रान्ति - दूध, दही, फल दान।
५. श्रावण मास - कर्क संक्रान्ति - दूध की मिठाई घी दान।
६. भाद्रपद मास - सिंह संक्रान्ति - वस्त्र, गुड़ दान।
७. आश्विन मास - सिंह संक्रान्ति - वस्त्र, गुड़ दान।
८. कार्तिक मास - कन्या संक्रान्ति - दूध, गुड़, तिल दान।

९. मिंगसर मास - वृश्चक संक्रान्ति - घर के समान अन्न दीपक दान।
१०. पौष मास - धनु संक्रान्ति - वस्त्र, तेल दान।
११. माघ मास - मकर संक्रान्ति - तिल, सोना चाँदी धी तेल दान।
१२. फाल्गुन मास - कुंभ संक्रान्ति - जल दान।

पूर्णिमा

पांच धान २५ पूर्णिमा का व्रत करना चाहिए। यह व्रत वैशाख या मिंगसर मास से शुरू करते हैं। पहले पांच पुण्यों को चावल, फिर गेहूँ, फिर मूँग, फिर चना दाल, फिर बाजरी खाकर करते हैं। २५ ब्राह्मण को खाना खिलाते हैं और दक्षिणा देते हैं।

नोट- जो चीज खाते हैं। वहीं ५-५ सेर दान देते हैं।

अमावस्या

तेरह धान की अमावस्या व्रत करना चाहिए। हर एक अमावस्या को चावल, आटा, जौ, बाजरी, अरहर, मूँग, मोठ, हवेजी, उड्ड, जंवार, गवार, मकई, मटर कोई एक धान खाते हैं। जिस धान को खाते हैं वहीं धान एक किलो दान करते हैं। तेरह ब्राह्मण को भोजन कराते हैं साथ में दक्षिणा देते हैं।

नोट - अधिक मास की अमावस्या से यह व्रत शुरू करते हैं।

बावन जी का बेला

पांचों वस्त्र या धोती, उपरणाद्व, एक छाता, गोमुखी माला, कमण्डल, खड़ाऊ, झोली और कन्टोप साथ में सन्ध्या के बर्तन भी देते हैं। एक छींका जिसमें पांच हांडी, किसी भी धातु की चाँदी या पीतल की अपनी इच्छानसार उसमें दूध, दही, धी, चीनी, चावल भरकर देते हैं। चाँदी बाँटते हैं। जिसमें १३ प्याला बनाते हैं। छींका भी बनाते हैं।

बारह प्याला बहन बेटियों को बाँटते हैं। एक प्याला मन्दिर में देते हैं या बावन जी को देते हैं। ब्राह्मण को बावन जी के रूप में वस्त्र एवं छींका देते हैं। मन्दिर में भगवान के वस्त्र देते हैं। साथ में मिश्री देते हैं। एक माला का होम करके १२ ब्राह्मण जिमाते हैं। साथ में दक्षिणा देते हैं।

बारह मास

चैत्र महिने की शुक्लपक्ष की दशमी से आरम्भ करते हैं। बारह महिने पूरा एक समय खाना खाकर यह व्रत करते हैं। गणगौर की पूजाकर के इस व्रत का प्रारम्भ करते हैं।

चैत्र - गणगौर की पूजा करते हैं।

वैशाख - बड़, पीपल सींचना, सोने चाँदी का पत्ता चढ़ाते हैं।

ज्येष्ठ - कोई पछ्ये, तभी पानी पीते हैं। चप्पल नहीं पहनते। किसी के घर नहीं जाते हैं। पानी और चप्पल दान करते हैं।

आषाढ़ - विस्तर पर नहीं सोते हैं। सेज का दान करते हैं। पंखा अपने हाथ से नहीं चलाते हैं। पंखे का दान करते हैं।

सावन - हरा साग नहीं खाते हैं। हरे साग का दान करते हैं।

भादो - दही नहीं खाते हैं। दही का दान करते हैं।

आसोज - दूध के बने पदार्थ नहीं खाते हैं। दूध का दान करते हैं।

कार्तिक - तेल, दाल नहीं खाते हैं। धी-दाल का दान करते हैं। कार्तिक में गंगा स्नान करते हैं।

मिगसर - मुँग नहीं खाते हैं। मुँग का दान करते हैं।

पौष - पूरे महीने बिना नमक से खाना खाते हैं। नमक का दान करते हैं।

माघ - मटके में जल भर कर उस जल से सुबह ४ बजे नहाते हैं। नहाकर सबसे पहले सूर्य भगवान का मुँह देखते हैं। एक माला का हवन करते हैं। तीन वस्त्र ही ओढ़ते, पहनते, बिछाते हैं।

फाराण - होली खेलते हैं। गुलाल भर कर प्याला मन्दिर में देते हैं।

चैत्र - गणगौर की पूजा १६ दिनों तक करके बारस को गवर ईशर की पैरावणी, गहने, कपड़े, श्रृंगार छाबड़ी, खोला भरकर गणगौर को घुमाते हैं। फिर अपने घर के गुरु महाराज या पण्डित जी को गणगौर दे देते हैं। एक माला का होम होता है। ३६५ ब्राह्मण को भोजन करवाते हैं।

नोट - एक साथ सम्भव न हो तो रोज एक ब्राह्मण भी जीमा सकते हैं।

पूरे बारह महीने पण्डित से महीनों का महात्म्य सुनते हैं। उसी अनुसार दान व्रत करते हैं।

जयन्ती व्रत

वैष्णवों के चार जयन्ती व्रत होते हैं। जो वैष्णव जयन्ती व्रत करते हैं। उन्हें इसका उद्यापन अवश्य करना चाहिए।

नरसिंह चतुर्दशी-

१४ ब्राह्मण को खाना खिलाते हैं। दक्षिणा देते हैं। नरसिंह भगवान के मन्दिर में वस्त्र धराते हैं। भेंट धराते हैं। सामग्री के रूप में पताशा या मिश्री भेंट करते हैं।

रामनवमी -

नौ ब्राह्मण को खाना खिलाते हैं। दक्षिणा देते हैं। रामचन्द्र जी के मन्दिर में भगवान के वस्त्र देते हैं। भेंट धराते हैं। पताशा या मिश्री भेंट करते हैं।

बामन द्वादशी -

१२ ब्राह्मण जिमाते हैं। शुक्ल पक्ष की एकादशी और द्वादशी का व्रत करते हैं। बामन भगवान के वस्त्र पहनाते हैं। मिश्री देते हैं।

नोट - सभी जयन्ती व्रतों में फलिहार लेने का नियम है। फिर अपने स्वास्थ्य के अनुसार एवं गुरु घर की आज्ञा अनुसार करते हैं।

जयन्ती व्रत का उद्यापन -

जन्माष्टमी को आठ ब्राह्मण जिमाते हैं। ठाकुर जी का वस्त्र, कुण्डल चांदी की बाँसुरी एवं पाँच किलो फल एवं पंजीरी देते हैं।

कृष्ण पक्ष की अष्टमी को व्रत कर उद्यापन करते हैं।

बुधपूजा -

पण्डित के कहे अनुसार यह व्रत शुरू करते हैं। यह व्रत सुआ, सूतक, अशुद्धता और अन्धेरे पखवारे में नहीं कर सकते हैं। बुधवार को जब अष्टमी तिथि आती है तब यह व्रत शुद्धता से किया जाता है।

इसमें एक धान की आठ वस्तु बनती है। जैसे - कसार, पेड़ा, जगन्नाथ जी के खाजा, गुलगुला, पंधारी के लाडु, पुड़ा, फीणी और कोई भी एक तरह फल आठ नग दान करते हैं। आठ नग ही खाते हैं।

दान करने का नियम - कांसे की छन्नी में आठ नग रखकर लाल कपड़े से बाँधकर ब्राह्मण को या मन्दिर में देते हैं। साथ में दक्षिणा के रूपये भी दिये

जाते हैं।

नोट: खाने के आठ नग शक्तिनुसार जितना बड़ा खा सके यह पूरा व्रती को खाना पड़ता है। दान करने वाले बड़े भी बना सकते हैं।

पञ्चपर्वी

संक्रान्ति, व्यतिपात, बैधृत, पूर्णिमा, अमावस्या, इन तिथियों का व्रत एक साल तक करते हैं और तेरह वस्तु का दान करते हैं। दान में छोटी या बड़ी कोई वस्तु दे सकते हैं। जैसे - मिठाई, फल, मेवा आदि।

पयो व्रत

फाल्गुन बढ़ी एकम से तेरस तक यह व्रत करते हैं। इसमें प्रतिदिन सिर्फ दूध ही पीते हैं और एक माला का हवन करते हैं। प्रतिदिन दो ब्राह्मण को खीर (पय) का भोजन कराकर दक्षिणा देते हैं।

स्वर्गद्वारी के नियम

स्वर्गद्वारी महिने में पाँच व्रत होते हैं। अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति एवं दो ग्यारहस | अमावस्या को जौ का आटा खाते हैं। पूर्णिमा को चावल खाते हैं। संक्रान्ति और एकादशी को फलिहार का व्रत करते हैं।

दान-

इसमें ५ किलो चावल, चाँदी का प्याला, साड़ी, लहंगा, ब्लाउज, रूमाल सुहासणी को देते हैं।

नोट- यह व्रत कई वर्षों बाद आता है। पण्डित के द्वारा पूरी जानकारी करके ही इसका प्रारम्भ करते हैं। कहते हैं कि एक वर्ष में जब तीन सोमवती अमावस्या आती है तब स्वर्गद्वारी होती है।

चैत्र मास

नया सम्वत्

भारतीय धर्मशास्त्रों के अनुसार चैत्र शुक्ल (एकम) से नये वर्ष का आरंभ माना जाता है। इसी दिन से विक्रम सम्वत् का आरंभ होता है। पौराणिक तथा ऐतिहासिक दोनों दृष्टियों से इस तिथि का बड़ा महत्व है।

१. नए वर्ष के प्रारंभ से सबसे पहले सुबह उठते ही भगवान गणेश एवं देव का सुमिरन कर नए वर्ष का हृदय से स्वागत करना चाहिए।

२. सर्वप्रथम प्रातः काल ठाकुरजी के नीम और मिश्री भोग लगाकर हमें प्रसाद रूप में ग्रहण करना चाहिए ।
३. हमें इस दिन चन्द्रमा का दर्शन अवश्य करना चाहिए ।
४. पानी की मटकी, पंखी, जल-व्यवस्था हेतु रुपये दान देना चाहिए । इस दिन पंचांग का दान करते हैं व अपने घर में भी नए वर्ष का पंचांग रखते हैं ।

गणगौर

चैत्र सुदी तीज को गणगौर का व्रत आता है । गणगौर कुँवारी और सुहागने सभी करती हैं । कुवारियाँ अच्छे वर की प्राप्ति हेतु एवं सुहागनें अखण्ड सौभाग्य के लिए यह व्रत करती हैं ।

पूजन विधि

कन्याएँ सोलह दिन तक सुबह माँ गणगौर का पूजन करती हैं और बासिडा के दिन से मिट्टी की गणगौर बनाकर उस की पूजा करते हैं और शाम को दूध पिलाते हैं व धूप खेते हैं । गौर का बंदोरा निकालते हैं व गीत गाते हैं ।

उद्घापन

उद्घापन में करने योग्य बातें -

१. गणगौर के व्रत का उद्घापन शादी के बाद करते हैं ।
२. १६ औरत को भोजन करवाकर एक-एक ब्लाउज पीस व सुहाग पीटारी दी जाती हैं ।
३. गणगौर को वेश पहनाते हैं एवं उसका खोल भी भरते हैं ।

चैत्र उत्तरते एकम मे नवरात्रि प्रारंभ हो जाती है व नवमी को रामनवमी का उत्सव होता है । पूर्णमासी को हनुमान जयन्ती होती है ।

बैसाख

सब महिनों में बैसाख दान, धर्म, जप, हवन इत्यादि शुभ कार्यों के लिए श्रेष्ठ माना जाता है ।

आखा तीज -

१. तीज को नया घड़ा डाल लें। घड़े के साथिया करके मोली बांध दें।
२. दूज की शाम को पांच या सात अनाज का खीचड़ा व अम्लवाना, बड़ी की सब्जी बनाते हैं।
३. तीज की सुबह गेहूं व पाँच या सात अनाज का खीचड़ा अम्लवाना व बड़ी की सब्जी और दुपरतिया फलका बनाते हैं।
४. इस दिन घड़ा व खीचड़े का सीधा, हल्दी, खरबूजा, मतिरा, पंखा, छाता, चप्पल, चीनी व दक्षिणा ब्राह्मण को देवें।
५. इस दिन नए कपड़े पहनने का प्रचलन है।

नरसिंह चौदस

बैशाख सुदी चौदस को बारह बजे भगवान की आरती करके एक समय खाना खाकर यह व्रत किया जाता है।

ज्येष्ठ मास

महेश नवमी

जेठ शुक्ला नवमी को महेश नवमी आती है। पौराणिक कथाओं अनुसार भगवान महेश और माता पार्वती के आर्शीवाद से इसी दिन माहेश्वरी वंशों की उत्पत्ति हुई थी। इसलिए हम माहेश्वरी इस दिन भगवान महेश की पूजा अर्चना कर उत्सव मनाते हैं।

निर्जला एकादशी

१. जेठ शुक्ला एकादशी को निर्जला एकादशी आती है। इस दिन व्रत करना चाहिए।
२. ब्राह्मण को घड़ा, चीनी, पंखा, फल, दक्षिणा आदि देनी चाहिए।

उद्घापन

२६ ब्रात्सण जोड़े को भोजन व सब को घड़ा (गिलास या लोटा भी दे सकते हैं), दक्षिणा पंखी, श्रद्धा अनुसार कपड़े दे। ये बारस को करते हैं।

आषाढ मास

देवशयनी एकादशी

आषाढ शुक्ला एकादशी को देव शयनी एकादशी आती है। आषाढ से कर्तिक की एकादशी तक चौमासा रहता है। चार्तुमास में भगवान विष्णु क्षीर सागर में

शेष शयन करते हैं और इसके बाद कार्तिक शुक्ला देवोत्थनी एकादशी को उठते हैं। इस कारण प्रभु के सोने वाली एकादशी को हरिशयनी और उठने वाली एकादशी को प्रवोधनी एकादशी के नाम से जाना जाता है।

जो देव उठनी एकादशी करें तो लगातार चार महिने एकादशी करनी चाहिए। चौमासे का चार महिने का व्रत करना चाहिए और कार्तिक की एकादशी को उद्यापन करना चाहिए। हो सके तो थाली छोड़कर पत्तल में भोजन करना चाहिए।

चौमासा

आषाढ़ शुक्ला दशमी से कार्तिक शुक्ला द्वादशी तक चौमासा का व्रत करते हैं। इसमें सावन में हरा साग नहीं खाते, भादो में दही नहीं खाते, आसोज में दूध नहीं खाते, कार्तिक में दाल-घी नहीं खाते हैं। कार्तिक में गंगा स्नान भी करना चाहिए।

इसमें व्रत करने वाला एक धान या तीन धान या अपनी स्वास्थ्य के अनुकूल भोजन ग्रहण करते हैं। विद्वान पण्डित के द्वारा पूर्णाहृति पर हवन करते हैं। पैरावणी, सुहाग-छावड़ी, गहना, सुख-सैया आदि देते हैं।

१२५ ब्राह्मण को भोजन करवाते हैं साथ में दक्षिणा देते हैं।

पूजन सामग्री की सूची पण्डित द्वारा मिलती है।

नोट - एक साथ सम्भव न हो तो रोज एक ब्राह्मण भी जीमा सकते हैं।

वैतरणी

वैतरणी का व्रत वैशाख या मिंगसर या माघ की शुक्ल पक्ष की दशमी से शुरू करते हैं। बारह महीने दशमी, एकादशी, द्वादशी का व्रत करते हैं।

एकादशी कोई निकोट करता है कोई दूध फल लेकर करता है। दशमी और बारस को एक धान की रसोई सेंधा नमक की खाते हैं। दूध-घी गाय का ही खाते हैं। पीहर में छोड़कर किसी के घर का एक वर्ष तक नहीं खाते हैं।

पूरे वर्ष तीन धान ही (जौ, चावल, गेहूँ) खाते हैं, चार महीने गेहूँ की रोटी, चार महीने जौ और चार महीने चावल खाते हैं। तेल भी नहीं खाते हैं। दशमी बारस को हाथ से पीसा आटा खाने का नियम है। गेहूँ में जौ नहीं होना चाहिए।

फिर जिसके जैसा सम्भव हो। जमीकन्द का समान भी नहीं खाते हैं, सब्जी आलू, मेरी, सांगरी आदि खा सकते हैं। जो खाना खाते हैं। उसके चार भाग

करते हैं। एक-एक भाग गाय, कुत्ता, भिक्षु एवं स्वयं खाते हैं। पण्डित द्वारा होम होता है। पेरावणी, सुहाग छाबड़ी, गहने, सुख-सेज्या आदि के साथ गौ दान भी देते हैं। ५१ ब्राह्मण जिमाते हैं। दक्षिणा देते हैं।

इसमें पाँचो जयन्ती व्रत भी दूध-फल लेकर करना पड़ता है।

पूजन सामग्री की सूची पण्डित जी द्वारा मिलती है।

नोट - व्रत के समय रजस्वला स्त्री को नमक या चीनी का सेवन नहीं करना चाहिए।

गुरु पूर्णिमा

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा आती है। भारतीय संस्कृति में गुरु पूर्णिमा की बहुत महत्ता है। आज केंद्रिय दिन गुरु की पूजा करते हैं।

श्रावण मास

मंगला गौरी

मंगला गौरी का व्रत श्रावण मास में शुरू होता है। सुहागन स्त्रियां श्रावण के प्रत्येक मंगलवारको यह व्रत करती हैं। पांच वर्ष तक यह व्रत किया जाता है।

मंगला गौरी की मिट्टी की मूर्ति बनाकर उसे कपडे पहना कर श्रृंगार करे एक सोने की नथ एवं चांदी की पायल विघ्निया पहनाए। बिन्दी, चूड़ी, सिन्दूर, काजल आदि सामान से सुहाग छाबड़ी तैयार करें एवं साड़ी ब्लाउज का बेस तैयार करें।

पूजा की सामग्री -

१६ पत्ता अमरुद, १६ बेल पत्र, १६ आमका पत्ता, १६ आपा मार्ग (चिङ्गचिङ्गी), १६ आक, १६ गूलर, १६ जामुन, १६ पिपल, १६ रुद्राक्ष, १६ शम्पी, १६ बड़, १६ अनार, १६ पलाश, १६ अपराजिता, १६ शैनी इन सभी वृक्षों के १६ पत्ते, १६ तरह के १६-१६ फुल, १६ पान पत्ते, १६ सुपारी, १६ लौंग, १६ इलायची, १६ आटा गहूँ के लड्डू, आटा की शिलालोड़ी, आटा का डमरू, आटा का १६ दीया बनाये व १६ तार की बत्ती बनाकर जलाये। उजमन में १६ जोड़ों को पुरुष का पेन्ट सर्ट व स्त्री को साड़ी, ब्लाउज एवं

सुहाग छावड़ी देकर जिमाए ।

शिव-पार्वती का कपड़ा, सुहाग छावड़ी, स्वर्ण आभूषण एवं पायल विश्विया
पूजा में चढ़ाए ।

छोटी तीज व हरियाली तीज

एक धान खा कर यह व्रत करते हैं और दोपहर में ही भोजन करते हैं ।

सावन सुदी तीज को छोटी तीज का व्रत करते हैं । घर की बहन बेटीयों को
दूज के दिन सिन्धारा करवाते हैं । उन को पीहर बुलाकर मेहंदी लगवाते हैं ।
नई व्याही हुई लड़कियां पहले सावन पीहर में रहती हैं ।

उजमन -

१६ सुहागने, एक ब्राह्मणी, एक विनायक जीमाते हैं या उसकी जगह थाली दे
सकते हैं व दक्षिणा देते हैं ।

नाग पंचमी

१. श्रावन शुक्ल पंचमी को नाग पंचमी आती है । नाग देवता की
पूजा करते हैं ।
२. दिवार पर गोबर से पांच नाग बनाते हैं, एक की पूँछ नहीं बनाते । मोठ,
बाजरी व कच्चे दूध से पूजा करते हैं और कुछ लोग ठण्डी रसोई
खाते हैं ।
३. मीठी पुड़ी नाग देवता को चढ़ाते हैं ।

श्रावण पूर्णिमा / जनेऊ पूर्णिमा / रुक्षा बन्धन

श्रावण सुदी पूर्णिमा को राखी पूर्णिमा भी कहते हैं । इस दिन पंडितजी से राखी
बंधवाकर रुपया दिया जाता है ।

इस दिन जिन लोगों ने जनेऊ लिया होता है वो गंगा नदी, या कुवा पर जाकर
गौ मूत्र, गोबर, गंगा जल, गंगाजी की मिट्टी, गोपी चंदन आदि लगाकर
स्नान करते हैं तथा श्रवणी करता है । उसके बाद जनेऊ और सप्त ऋषियों
की पूजा कर नई जनेऊ धारण करता है ।

भाद्र भास

कजली तीज व बड़ी तीज

१. भाद्र व्रत कृष्ण पक्ष की दूज का सिंधारा व तीज का व्रत होता है ।

२. शादी के पहले चार साल गेहूँ का सवासेर का पिण्डा, अगले चार साल चने का सवा सेर का पिण्डा और फिर चार साल चावल का पिण्डा होता है। सग्गों का पिण्डा भी इसी तरह होता है जो सासु जी (सवा सेर) का व ब्रात्पण (सवा सेर) का देते हैं। पासने वाले पिण्डे से ही कहानी की छोटी बटड़ी बनाते हैं।

आदसेरी

(यह इच्छानुसार है)

शादी के सोलहवे साल में आदसेरी होती है। जो सवा पांच सेर की गेहूँ की होती है। कांसे की थाली में जमा कर सुंदर सजाते हैं। चाँद उगने पर गठजोड़ा से बधारे। इसी तरह चने व चावल की भी आदसेरी होती है। तेरहवे साल फिर गेहूँ की करें। इस तरह १६ बरस पूरे होते हैं। इसके बाद जो इच्छा हो उस का बारा बना सकते हैं।

१. ब्रात्पणी की आदसेरी - १६ वर्ष तक हर साल आधसेरी नारियल के साथ जो नई थाली में जमा कर, एक साड़ी ब्लाऊज के साथ दें।
२. आदसेरी अगर कम करना चाहे तो सवा किलो की गट समेत कर सकते हैं व ब्रात्पणी की १/२ केजी की गट समेत करें।
३. कुंवारी कन्या का गेहूँ का बारा बनाते हैं।

नीमड़ी पूजा के लिए

एक पाटे पर आक के पत्ते (कुछ लोग आक के पत्ते लगाते हैं) बिछा कर मिट्टी के दो खाने बना लें। उसमें डाली लगा दें।

पूजा- रोली, काजल व मेहंदी की सात टिकी निकाले। दीया जला कर पूजा करें। कच्चे दूध, जल सें नीमड़ी को सीचें। सब तरह के फल व सातु रख के नीमड़ी में देख लें। नथ, गोटा, दिया, नीमड़ी, मोती, सब जल में देखें व कहानी सुनें।

चाँद को अरग देते हुए बोले, चाँदड़लो उफ्वासियो, कुल में हूयो उजास, मैं सुहागन सीचियो, सें चौथ की रात, सोने के रो काठलो, गल मोतियन को हार चढ़ूँमा के अरग देवता, जीयो वीर भरतार।

व्रत खोलते समय प्रथम आक के पत्ते का दोना बनाकर उसमें फिदल परोसते हैं। फिदल - कच्चा दूध, दही, चीनी को मिलाकर बनाते हैं। आक के पत्ते पर सातु रखकर सात बार उसकी चिटकी लेते हैं। कोई गर्म खाना खाते हैं कोई

नहीं।

उबछूठ

भादव के कृष्ण पक्ष में उबछूठ आती है। मासिक धर्म के दोष निवारण के लिए यह व्रत करते हैं। सताइस वर्ष तक इस व्रत को करने का महात्म्य है। शाम को सूर्यास्त से पहले नहा ले तथा लाल फुल, लाल चंदन, काला तिल, एवं लाल फल ले कर तांबा के लोटे से सूर्य एवं चन्द्रमा को अरग देवे। एक धान (गेहूँ) खाना चाहिए नमक नहीं खाते। चाँद को देखकर भोजन करते हैं।

कृष्ण जन्माष्टमी

भगवान् श्री कृष्णचन्द्र का जन्म भादव की अष्टमी (कृष्णपक्ष) में आता है। कृष्ण भगवान् का जन्म अष्टमी बुधवार रोहिणी नक्षत्र की अर्द्धरात्रि के समय हुआ था। इस रात्रि में सब लोग हर्षोल्लास के साथ जन्मोत्सव मनाते हैं। जन्माष्टमी वाले दिन भगवान् को भूले में बैठाते हैं। नये केशरिया वस्त्र पहनाते हैं।

बछ बारस

भादव कृष्णा पक्ष कि द्वादशी को बछ बारस मनाते हैं। एकादशी के दिन मोठ बाजारी भीगा कर रख दे, भैंस के दूध का दही जमाये। बारस के दिन कुमकुम चावल, साबुत सुपारी, मेहंदी, दिया, गाय को ओढ़ने के लिए लाल ब्लाउज, भीगे मोठ, बाजारी से गाय और बाढ़ा सहित गाय की पूजा की जाती है। फिर भैंस के गोबर की पाल जमीन पर बना कर उस में पानी भर कर, उस की पूजा की जाती है, बूदिया के लड्डू (जितने लड्डू के होते हैं उतने) पाल पर चढ़ाए जाते हैं। फिर लड्डू के (बेटे) के पैर के अंगूठे से एक साइड से पाल को काट देते हैं तब वो लड्डू उठा कर बच्चों को खिलाये जाते हैं। इस दिन औरतें चाकू से काटा हुआ, ढक कर पकाया हुआ एवं गेहूँ का आटा नहीं खाते। गाय के दूध से बनी कोई चीज भी नहीं खाते।

गणेश चौथ

इस दिन गणेश जी को दूर्वा एवं मोदक चढ़ा कर पूजा की जाती है।

ऋषि पंचमी

भाद्र शक्ल पंचमी की ऋषि पंचमी आती है। सारी माहेश्वरी जाति इसी दिन

रक्षाबंधन का त्यौहार मनाते हैं। ऋषि पंचमी के दिन बहिन भाई के लिए व्रत करती हैं।

ऋषि पंचमी का व्रत भी कुछ लोग करते हैं। यह व्रत आठ बरस कर के उज्मन किया जाता है।

आश्विन मास

श्राद्ध

भाद्र सुदी पूर्णिमा से आश्विन कृष्णा अमावस्या तक पितृ पक्ष या श्राद्ध होते हैं। इन दिनों अपने पितरो के दिन श्राद्ध किया जाता है। पितृ पक्ष में रोजाना स्नान करने के बाद एक माला महामृत्युन्जय मंत्र का जाप करे। सूर्यदय से दिन के १२ बजे की बीच श्राद्ध करे तर्पण में तिल व तुलसी का प्रयोग अति आवश्यक है। चना, मसूर, उड्ड, कुल्थी, सत्तू, मुली, काला जीरा, कचनार, खीरा, काला उड्ड, लौकी, काला नमक, बड़ी सरसों, काला सरसों की पत्ती, श्राद्ध में निषेध है।

श्राद्ध पक्ष या पितृ पक्ष में जब श्राद्ध करते हैं उस वक्त गोग्रास, श्वान बलि, काक बलि, अतिथि बलि, कीट बलि आदि देते हैं, इनके मंत्र निम्न हैं।

गौग्रास

सौरभेथ्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराश्यः ।

प्रतिगृहन्तु मे ग्रांस, गावस्त्रैलोक्यमातरः ।

यदमन्नं गोभ्यो न मम ॥

श्वानबलि

द्वौ श्वानौ श्याम-शबलौ वैवस्वतकुलोभ्दवौ ।

ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥

इदमन्नं श्वभ्या न मम ॥

काकबलि

केन्द्र-वारुण वायव्याः सौम्या वै नैर्घृतास्तथा ।

वायसाः प्रतिगृहन्तु भूमावन्नं मयार्पितम् ॥

इदमन्नं वायसेभ्यो न मम ॥

अतिथि-बलि

देवा मनुष्याः पश्वो वयांसि,
सिद्धाश्च यक्षोरगदैत्यसंघाः ॥
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ताः
ये यान्नमिच्छान्ति मया प्रधत्तम् ॥
इदमन्नं देवादिभ्यो न मम ।

पिपीलिका कीट पतंग बलि

पिपीलिकाः कीटपतंगकाद्याः बुभुक्षिताः कर्मनियोगबद्धाः ॥
प्रयायन्तु ते तृप्तिमिद मयाऽन्नं । तेव्योऽवसृष्ट मुदिताः भवन्तु ॥
इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम ।

नान श्राद्ध

आसोज शुक्ला एकम् का नान श्राद्ध आता है । जहाँ बेटी, जंवाई, दोहेता तीनों होते हैं वहीं पर नान-श्राद्ध मनाया जाता है । नान श्राद्ध करने का विशेष महत्व है ।

दुर्गा पूजा-नवरात्रा

आसोज शुक्ला एकम् से शरदीय नवरात्रा आरंभ होती है । इस नवरात्रा में चैत्र की नवरात्रा की तरह पूजा पाठ का विद्यान है । नौ दिन नवरात्रा के बाद दशमी को दशहरा आता है । इसे विजयादशमी कहते हैं ।

शरद पूर्णिमा

आसोज शुक्ला पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा रहती है । इस दिन भगवान श्रीकृष्ण का रासोत्सव मनाया था । शरद पूर्णिमा से कार्तिक मास प्रारंभ होता है । इस दिन भगवान को खीर या खीरान्न भोग लगाने का विशेष महत्व है । गंगा स्नान, तारा स्नान, आकाश दीया आज ही से शुरू करते हैं । सफेद वस्त्र ठाकुर जी को धराते हैं । स्वयं भी श्वेत वस्त्र पहनते हैं । शरद पूर्णिमा वाले दिन चन्द्रमा पूर्थी के काफी नजदीक रहता है । इसलिए उसकी किरणों से अमृत और आरोग्य की प्राप्ति सुगमता से होती है, ऐसी मान्यता है । चन्द्रमा की रोशनी में १०८ बार सुई पिरोते हैं, कहते हैं इससे नेत्र की रोशनी तेज होती है ।

कार्तिक मास

अन्य महिनों से श्रेष्ठ मास कार्तिक मास माना गया है। कार्तिक मास में स्नान, देव पूजा, तुलसी पूजा होती है। कार्तिक मास में स्थानों पर स्त्रियाँ एकत्रित हो गंगा स्नान करती हैं। तुलसी पथवारी की पूजा करती है। परिकमा लगाती है।

आकाशदीप

कार्तिक मास में दीपदान करने का विशेष महत्व है। आकाश मार्ग से देवताओं को रोशनी मिलती है और वे प्रसन्न होते हैं। पित्तरों को भी रोशनी मिलती है। वे भी प्रसन्न रहते हैं। एक बांस में लालटेन या बल्ब बांध कर आकाशदीप जलाते हैं। कार्तिक मास में दीपदान देने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

करवा चौथ

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को करवा चौथ आती है। सुहागिन स्त्रियाँ इस व्रत को करती हैं। चन्द्रमा को अरग देकर व्रत करते हैं। पूजा करने के पहले माथा धोती हैं। सुहाग के गहने कपडे पहनती है। फिर पूजा करती है। जल भरा हुवा करवा को चालनी के अन्दर रखकर सुहागीनी आपस में करवा बदलती है।

करवो ले एक करवो ले
भायोरी बेन करवो ले
चालनी में चाँद देखती करवो ले
सर्व सुहागण करवो ले
बरत भानानी करवो ले
ऊवा सुवा करवो ले
दिन में चाँद उगाणी करवो ले।

नोट: चालनी में गेहूँ, गुड, काचर, बोडी या फली, पैसा रखा जाता है।

चन्द्रायण व्रत

कार्तिक मास के प्रारम्भ में आसोज पूर्णिमा से चन्द्रायण व्रत शुरू करते हैं। पण्डित के द्वारा घोड़स मात्रिका, नवग्रह, ब्रह्माजी का कलश आदि बैठकर

अखण्ड दीपक जलाते हैं। पण्डित के द्वारा यह पूजा होती है। दीपक एक धी का और एक तेल का जलाते हैं। प्रतिदिन एक माला का हवन ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र से करते हैं।

पहले दिन एक रूपये के सिक्के के वजन के बराबर बादाम का हलवा बनाते हैं। दूसरे दिन दो रुपया के वजन बराबर इस प्रकार पन्द्रह दिन चन्द्रमा की कला के अनुसार बढ़ाते हैं और फिर घटाते हैं। पहले वजन बढ़ता है उसी क्रमानुसार घटता है। जितनी मात्रा का बनाते हैं। पण्डित के कहेनुसार उसी में गाय कुत्ता अन्य का हिस्सा निकालते हैं, और परासते हैं। चान्द्रायण के व्रत में एकादशी, पूर्णिमा, अमावस एवं व्यतिपात के दिन निगोठ करते हैं।

व्रत की पूर्णाहृति पर हवन, पेरावणी, गहने, कपड़े, सुहाग छाबड़ी, सिरख, पथरना, देते हैं। ३३ ब्राह्मण को भोजन कराते हैं। दक्षिणा देते हैं।

नोट - हो सके तो एक महिने गंगाजी नहाते हैं।

नारायण तारायण व्रत

कार्तिक मास में यह व्रत करते हैं आसोज पूर्णिमा से व्रत का प्रारम्भ करते हैं। पहले दिन निकोट, दूसरे दिन दोपहर में, तीसरे दिन तारा देखकर भोजन करते हैं। यह क्रम एक महिने तक चलता है। अन्त में पूर्णिमा को ३३ ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा देते हैं। व्रत करके चाँदी की नारायण भगवान की छोटी मुर्ती (फुलड़ा) बनाकर देते हैं।

नोट - एक साथ सम्भव न हो तो रोज एक ब्राह्मण भी जीमा सकते हैं।

तारा भोजन

कार्तिक मास में यह व्रत आसोज पूर्णिमा से प्रारम्भ करते हैं। रात में तारा देखकर पारणा करते हैं। पूर्णाहृति पर ३३ ब्राह्मण जिमाते हैं दक्षिणा देते हैं। ३३ तारा मन्दिर में चढ़ाते हैं। एक साथ सम्भव न हो तो प्रतिदिन एक ब्राह्मण को जीमा कर दान कर सकते हैं।

छोटी सांकली

कार्तिक मास में यह व्रत करते हैं आसोज पूर्णिमा से व्रत का प्रारम्भ करते हैं। पहले दिन निकोट दूसरे दिन तीसरे दिन भोजन करते हैं। वापस एक दिन निगोठ करते हैं। अगर एकादशी या रविवार पड़ जाए तो उस दिन भी निगोठ करते हैं। यह क्रम एक महिने तक चलता है। अन्त में पूर्णिमा को ३३ ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा देते हैं।

बड़ी सांकली

कार्तिक मास में यह व्रत करते हैं आसोज पूर्णिमा से व्रत का प्रारम्भ करते हैं। पहले दिन निकोठ दूसरे दिन भोजन फिर दो दिन निगोठ करते हैं। अगर एकादशी या रविवार पड़ जाए तो उस दिन भी निगोठ करते हैं। यह क्रम एक महिने तक चलता है। अन्त में पर्णिमा को होम कराकर ३३ ब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा देते हैं। यथा शक्ति दान पुन्य करते हैं।

पंचभीखा

यह व्रत कार्तिक मास में किया जाता है। कार्तिक की शुक्ल पक्ष की एकादशी से पाँच दिन बराबर होने पर करते हैं। इस व्रत को पण्डित के द्वारा संकल्प ले कर अखण्ड धी का दीपक जलाया जाता है। इसमें रोज सुबह सिर्फ तुलसी चरणामृत लेते हैं। दो दिन निगोठ, एक दिन फलाहार जिसमें नमक नहीं खाते व फिर से दो दिन निगोठ किया जाता है। परिवार के लोग दीपक का दर्शन करने आते हैं और व्रती को अपनी इच्छानुसार रूपया देकर जाते हैं। पूर्णाहुति पर पण्डितजी एक माला का हवन करते हैं। पांच जोड़ा जोड़ी ब्राह्मण को जिमाया जाता है। इसमें जोड़े से श्रद्धानुसार दक्षिणा दी जाती है।

तुलसी तेला

यह व्रत कार्तिक मास में किया जाता है। नवमी, दशमी, एकादशी और द्वादशी चारों तिथियाँ बराबर होने पर ही यह व्रत होता है। नवमी, दशमी, एकादशी को व्रत होता है एवं द्वादशी को पालना होता है।

इस व्रत में भी पण्डित को बुलाकर संकल्प लेते हैं। अखण्ड दीपक जोड़े से जलाते हैं। बारस को तीन जोड़ा-जोड़ी जीमाते हैं और दक्षिणा में रूपया, नारियल देते हैं।

तुलसी विवाह

इसमें ग्यारहस का व्रत करके तुलसी जी की शादी करवाते हैं। गन्ने से मण्डप बनाकर शालिग्राम जी से गठजोड़ा जुड़वा देते हैं। इसमें एक माला का हवन भी होता है और कन्या दान की तरह परा विवाह करवाते हैं और बारस को ११ ब्राह्मण को जिमाकर जान जिमाने का रिवाज भी है। कपड़ा, गहना, श्रृंगार का सामान कन्या को जिस तरह देते हैं। वैसे ही दान देते हैं।



धनतेरस

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को धन त्रयोदशी के नाम से जाना जाता है। इस दिन धनवन्तरि वैद्य का जन्म दिवस मनाया जाता है। धरतेरस के दिन नये कपड़े पहनते हैं। चाँदी का समान खरीदते हैं। रात में दीपक जलाते हैं। दिये ११, २१ इस प्रकार जलते हैं। धनतेरस, रूप-चौदस, दीपावली को नये दिये जलाते हैं। दिये तिल या सरसों के तेल के जलाने चाहिए।

रूप चौदस

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को रूप चौदस रहती है। इसे हम छोटी दीपावली कहते हैं। रूप चौदस को घर के स्त्री पुरुष सुबह जल्दी उठकर अपना रूप श्रृंगार करते हैं। उबटन लगाते हैं। दीपदान भी रूप चौदस को करते हैं।

शुभ दीपावली

दीपों की कतार को दीपावली कहते हैं। दिवाली अमावस्या को रहती है। यह त्यौहार अन्धकार को दूर कर प्रकाश की ओर चलने कां संदेश देता है। दीपावली वाले दिन छीरसागर से लक्ष्मी जी प्रगट हुई थी और भगवान् विष्णु को प्राप्त हुई थी।

गोवर्धन पूजा

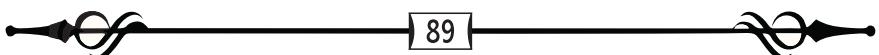
दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धन पूजा रहती है। घर के सब लोग जब सो जाते हैं तब घर की कोई भी बूढ़ी बड़ेरी अन्धेरे-अन्धेरे सुबह चार बजे उठकर अलक्ष्मीका निसारण करती है।

घर के मुख्य-मुख्य स्थान पर दिये वापस जलाती है। पूजन किए हुए भाड़ू सें मुख्य-मुख्य स्थान भाड़ती है और मन ही मन लक्ष्मी जी से प्रार्थना करती है। कुलक्ष्मी जाओ सुलक्ष्मी आओ घर में वास करो। लक्ष्मी घूमती हुई घर के उजाले को देख स्वच्छता को देख वास करती है।

बासी कुड़ा जब उठाकर ले जाते हैं तब उसे कुड़े के डिब्बे या कुड़ा घर में डालकर वापस मुड़कर नहीं देखते हैं। सूप को बजाते हुए वापस आते हैं।

आज के दिन से अन्नकूत शुरू होता है। तरह तरह के व्यंजन बना छप्पन भोग ठाकुरजी को भोग लगाते हैं।

गोवर्धन मांडना





घर के बाहर के दरवाजे के सामने गोवर्धन जी माँडते हैं। गोवर्धन जी गोबर से माँडते हैं। गोवर्धन बनाना हमें न आता हो तो स्वास्तिक बनाकर पूजा करते हैं। रात में जो लक्ष्मी पूजन की सामग्री रहती है वो ले जाते हैं उसी थाली से पूजा करते हैं।

भईया दूज

कार्तिक शुक्ला दूज को भईया दूज मनाते हैं। इसे यमदुतिया भी करते हैं। बहन भाई के टीका लगाती है। अपने घर भोजन पर बुलाती है। बहन के हाथ से खाने पर उम्र बढ़ती है। आज के दिन बहन की अंगुली से अमृत बरसता है।

गोपाष्टमी

कार्तिक शुक्ला अष्टमी को गोपाष्टमी रहती है। गाय की पूजा आज के दिन बड़ी श्रद्धा भावना से करते हैं। गाय माता को गुड खिला कर, गाय की पूजा करते हैं। सारे देवताओं की पूजा करने का जो फल मिलता है। वह गाय माता की पूजा से मिलता है।

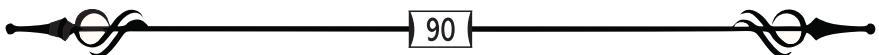
आंवला नवमी या कुम्हाण्ड नवमी

कार्तिक शुक्ला नवमी को आंवला नवमी रहती है। कुम्हडा दान देते हैं। सावुत कुम्हडा का छोटा सा टुकड़ा काट कर उसमें श्रद्धानुसार सोने चांदी की टिकड़ी या रुपया, लाल कपड़ा में बाध कर दान को ब्राह्मण का दान बताया गया है। आंवले के वृक्ष की पूजा करते हैं। आंवला दान देते हैं। द्वापर युग का आरंभ इसीदिन हुआ था। आज के दिन में जो भी दान देते हैं। वह अक्षय रहता है। आंवला वृक्ष की पूजा कुंकुम, चावल, कच्चा दूध, लाल वस्त्र, प्रसाद, धूप-दीप, ऋतुफल आदि से करते हैं।

देवोत्थान एकादशी

चौमासा की एकादशी को भगवान विष्णु शंखासुर नाम के राक्षस को मार कर अपनी थकान को दूर करने के लिए क्षीर सागर में शयन करने चले जाते हैं। उसके बाद देवोत्थान एकादशी कार्तिक शुक्ला एकादशी को आती है। तब भगवान जागे थे।

आज के दिन गंगा स्नान दान, धर्म करने का विशेष महत्व है। तुलसी जी का विवाह शालीग्राम भगवान के साथ आज के दिन हुआ। मंदिरों में गन्ने, तुलसी विवाह के लिए भेजते हैं।



मंगसिर मास

मार्गशीर्ष मास गोपमास है। यह गोप महिना भगवान को अति प्रिय है। इस पूरे महिने भगवान् को मंदिर में पंचमृत का भोग लगता है। मंगसिर शुक्ल पक्ष में भगवान् कि थाली करने का प्रचलन है।

विवाह पंचमी

मार्गशीर्ष पंचमीके दिन श्री रामजानकी विवाह पंचमीका उत्सव मानाया जाता है। प्रत्येक साल रामजानकी मन्दिर तथा जनकपुर थाम स्थित जानकी मन्दिर में विशेष उत्सव होता है। शुभ कार्य करने के लिए यह दिन अबूझ मुहूर्त है।

गीता जयंती

मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी को गीता जयंती रहती है। यह मोक्षदा एकादशी के नाम से प्रसिद्ध है। श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश इसीदिन कुरु क्षेत्र के मैदान में दिया था।

पौष मास

पौष मास में एक महिने का मल लगाता है। १४ दिसम्बर से १४ जनवरी तक मलमास रहता है। कोई भी शुभ-काम हम लोग इस महिने में नहीं करते हैं। सुर्योदय से पूर्व उठकर गंगा स्नान करते हैं। मंगल या शनिवार को मल उतारते हैं। मल उतारने के लिए बड़ा गुलगुल (इस दिन तेल जलाने का महत्व है) बनाकर ब्रात्पण, चील, डाकौत और कागला-कुत्ता को भी खिलाते हैं। मल उतारने के बाद ही घर में कोई भी शुभ काम करते हैं।

मकर संक्रान्ति

सूर्य जब धनुराशि को छोड़कर मकर राशि में प्रवेश करता है तब मकर संक्रान्ति होती है। संक्रान्ति कभी पोष मास कभी माघ मास में आती है। भारत में अंग्रेजी तारिख के अनुसार १४ जनवरी को एवं नेपाल में माघ एक गते को संक्रान्ति रहती है। संक्रान्ति के दिन ब्रात्पण एवं भिखारियों को दान देते हैं। तिल

से बड़ा कोई दान नहीं है। इच्छानुसार कोई भी चीज ब्राह्मण को चौहद जगह दें सकते हैं। आज के दिन खीचडी, मूली, तिल खाना और दान देना चाहिए।

माघ मास

माही चौथ

माघ कृष्ण पक्ष चतुर्थी को माई चौथ का व्रत रहता है। इस दिन चौथ का व्रत कर रात में चन्द्रमा को अर्ध्य देते हैं। व्रत करने वाले सुवह माथा धोते हैं। मेहदी लगाते हैं। तिल कुटा बनाते हैं। तिलकुट सफेद तिल और गुड़ का बनता है। महिने की चौथ में यह बड़ी चौथ मानी जाती है। चौथ की कहानी भी बोलते हैं सुनते हैं।

मौनी अमावस

माघ कृष्ण पक्ष अमावस को मौनी अमावस आती है। इस दिन मौन रहना चाहिए, ब्रह्मजी की पूजा करनी चाहिए, काले तिल के लड्डू में सोना डालकर कपड़े में बांधकर ब्रह्मण को देना चाहिए।

बसन्त पंचमी

बसन्त पंचमी माघ शुक्ल पंचमी को आता है। यह दिन भी शुभ कार्य के लिए बहुत ही शुभ माना जाता है। यह दिन ऋतुराज के आगमन की सूचना देता है। केशरिया रंग के चावल की रसोई बनाते हैं। मीठा भात, चरका भात पीले रंग का बनाते हैं। केशरिया पीला वस्त्र पहनते हैं। पत्नी आज के दिन पति को अपने हाथ से खिलाती हैं। पत्नी की अंगुली में अमृत बरसता है। यह पर्व हमें उत्साह के साथ मनाना चाहिए।

फाल्गुन मास

फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की शिवरात्रि आती है। शिव भक्त भगवान शंकर की पूजा करते हैं। एवं व्रत करते हैं। शिवरात्रि के व्रत से सभी पापों का नाश होता है। भोले शंकर को प्रसन्न करने के लिए रात्रि में जागरण करना एवं धूमधाम से शिव की उपासना करनी चाहिए।

होली

फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी से होलिका लग जाती है। होलीका

लगने के बाद होली तक कोई भी शुभ काम नहीं करते हैं। फालुन शुक्ल द्वादशी को खाटू श्याम का उत्सव मनाया जाता है।

बड़ी होली (छारंडी)

होली के दूसरे दिन चैत्र की एकम को छारंडी कहते हैं। आज के दिन केशरिया गलाबी रंग से होली खेलते हैं। कुँवारी लड़किया सुहागिन स्त्रियाँ आज के दिन से सोलह दिनों तक गवर की पूजा करती है। पालसिये में सोलह पिण्डी गवर की रखकर लाल गुलाल, कुंकुं, केशर, दूब से पूजा करती हैं।

सूरज रोटा

होली के बाद चैत्र महिने का जो पहला रविवार होता है। उसमें सूरज रोटे का व्रत रहता है। सूरज रोटे का व्रत कुँवारी सुहागिन सभी रखते हैं। भाई की मंगल कामना एवं आयु वुद्धि के लिए बहन यह व्रत करती है।

विधि: भगवान् सूर्य नारायण की पूजा करने के लिए हम कुंकुं, चावल, लाल पुष्प एवं रोटे के छिद्र से भगवान् के दर्शन करते हैं। यह रोटा गाय को खिलाते हैं और अपने लिए एक साबुत रोटा बनाते हैं। कहानी सुनकर व्रत करते हैं।

शीतला अष्टमी

चैत्र कृष्ण अष्टमी को शीतला अष्टमी व बासेडा आता है। आज के दिन शीतला माता की पूजाकर ठण्डी रसोई खाते हैं। शीतला माता की पूजा चेचक, आकड़ा-काकड़ा, ओरी के प्रकोप से बचने के लिए करते हैं। अष्टमी के दिन घर में चूल्हा नहीं जलाते हैं। माता जी को ठण्डी (पहले दिन बनी) राब रोटी मीठा भात, तरह-तरह के व्यंजन से रसोई ले जाकर शीतला मां के मंदिर में पूजा करते हैं। पानी चढ़ाते हैं। छोटे टाबरों की माँ को सारा दिन ठण्डा खाना-खाना चाहिए।

अधिक मास

हर तीन वर्ष के बाद जब एक मास बढ़ता है तब उसको अधिक मास या पुरुषोत्तम मास कहते हैं। जब दो मास आवें तब एक अमावस से दूसरी अमावस तक के समय को अधिक मास मनाते हैं।

इस मास में कोई भी शुभ-मांगलिक कार्य नहीं करते हैं। इस मास में भगवान् के मंदिरों में सालभर के सब त्यौहारों के उत्सव मनाते हैं।

इस मास में मासभर गंगा स्नान करना या घर में ठंडे पानी से स्नान करना, मास भर नहीं कर सके तो, आखिर पांच दिन पुरुषोत्तम भगवान की पूजा करना, पुरुषोत्तम मास की कथा सुनना चाहिए। श्रीमद्भागवत का पाठ करना और भागवत सप्ताह सुनना चाहिए। श्री सुक्त, पुरुषसुक्त, विष्णु सहस्रनाम, आदि के अनुष्ठान निष्काम भाव से करना। मास भर मंदिर में और तुलसी के आगे दीपक जलाना।

इस मास में बड़, पीपल, तुलसी, पथवारी और गाय की पूजा करना चाहिए। इस मास में शंकरजी की उपासना करने का विशेष महात्म्य है, भगवान शंकरजी के अशिव रूप की वंदना करते हुए भक्त लोग मास भर शिवलिंग पर बेलपत्र, धतुरा तथा पुष्प चढ़ाते हैं। गीली हल्दी से शिवलिंग बनाकर पीपल में या तुलसी की कुण्डी में रखकर कच्चा दुध, दही, गंगाजल चढ़ाकर चंदन, चावल, पुष्प, बेल पत्र और पैसा चढ़ाकर नमस्कार करते हैं। फलाहार, एकासना व्रत करना चाहिए। गेहौं की रोटी, दाना मेथी, तुरई और कांकड़ी का साग खाना चाहिए। हींग, तेल और जिमीकन्द नहीं खाना चाहिए। मास पूरा होने के बाद अमावस को तैतीस ब्रात्मण को खीर, मालपुवा का भोजन कराकर नारियल व रूपिया देना चाहिए। जोड़े से व्रत किया हो तो तैतीस जोड़ा को भोजन कराना चाहिए। ब्रात्मणीयों को साड़ी, ब्लाऊज, चूड़ी, टीकी और रूपया देना चाहिए। व्रत नहीं भी करें तो यथाःसम्भव ब्रात्मणों को तैतीस चीज दान करें व भोजन कराए।

एक काँसी की थाली में तैतीस मालपूवा, पुरुषोत्तम भगवान की सोने की मूर्ति या सोने की टिकड़ी और रूपया रखकर दूसरी काँसी की थाली से ढक कर लाल कपड़े में बांधकर ब्रात्मण से पूजा करवाकर ब्रात्मणों को दान दें।

एक अमावस्या को सीधा, नारियल और वस्त्र दक्षिणा सहित दान दें।

दीप दान

अधिक मास में दीप दान का विशेष माहात्म्य है।

एक थाली में चाँदी, तांबा, पितल या मिट्टी के तैतीस धी में दीपक जलाकर मंदिर में भगवान की आरती करके, थाली सहित दीपक मंदिर में छोड़ना।

एक छन्नी में तैतीस जगह पैसे रखकर, उन पर एक-एक धी की बत्ती जलाकर मंदिर में भगवान की आरती करके, छन्नी मंदिर में छोड़ना

पुरुषोत्तम मास में निम्न चीजों का दान करना चाहिए -

एकम- चांदी के पात्र में धी
दूज- काँसी का पात्र
तीज- १ किलो चना
चौथ- खारक
पंचमी- गुड तथा तुअर की दाल
षष्ठी- जौ तथा उडद
सप्तमी- लाल चंदन
अष्टमी- कपूर तथा केवडा
नवमी - केशर
दशमी- कस्तूरी
एकादशी- गोलोचन
द्वादशी- शंख
त्रयोदशी- धनिया
चृत्सुदशी- मोती
पूर्णिमा- पंचरत्न

एकम- मखाना व मालपूवा
द्वितीया- खीर
तृतीया- दही
चृत्सुधी- सूती वस्त्र
पंचमी- रेशमी वस्त्र
षष्ठी- उनी वस्त्र
सप्तमी- धी
अष्टमी- तिल
नवमी- चावल
दशमी- गेहूँ
एकादशी- दुध
द्वादशी- खिचडी
त्रयोदशी- शहद व चीनी
चृत्सुदशी- तांबा के पात्र में मूँग
अमावस्या- बेल, अधिक मास का फल